शोध मंथन Vol. XII No.IV Oct.-Dec. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

कोविड–19 महामारी का मलिन बस्तियों पर प्रभाव

प्राप्तिः 17.10.2021
स्वीकृतः 28.12.2021

अरविन्द कुमार यादव
शोध छात्र, इतिहास विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय
मेरठ
ईमेलः *arvindyadavkk1987@gmail.com*

सारांश

कोरोना वायरस महमारी ने विश्व की अर्थव्यवस्था को काफी नुकसान पहुंचाया है क्योंकि इसके चलते रोजगार के अवसर सीमित हो गये इसका सबसे अधिक प्रभाव दैनिक मजदूरी तथा कारखानों में काम करने वाले लोगों पर पड़ा है क्योंकि लॉकडाउन के चलते वे सभी कारखाने तथा निर्माण कार्य बाधित हो गये जिसके कारण इन कार्यों में संलग्न अधिकांश लोग मलिन बस्तियों में निवास करते है। जब इन मलिन बस्तियों के लोगों के रोजगार समाप्त हो गये तो इन लोगों के भुखे मरने की स्थिति उत्पन्न हो गयी इस कारण कुछ लोग अपने मूल गांवों की ओर पलायन करने लगे। इसमें जिन्दगी को बचाने की पहली प्राथमिकता थी शिक्षा और अन्य कार्य गौण स्तर का हो गया जिससे इन बस्तियों में निवास करने वाले लोगों ने बच्चों की शिक्षा पर कोई ध्यान नहीं दिया उसका प्रमुख कारण है। ऑनलाइन शिक्षा के लिए उनके पास पर्याप्त साधन नहीं थे जिसका एक कारण इन लोगों को शिक्षा और तकनीकी के ज्ञान का अभाव होना भी है। इन सभी तथ्यों से उजागर होता है कोरोना वायरस महामारी ने आर्थिक, सामाजिक गतिविधियों को काफी प्रभावित किया है।

प्रस्तावना

कोरोना वायरस की सर्वप्रथम जानकारी दिसम्बर 2019 में चीन के वुहान शहर से हुई। इसी क्रम में भारत के केवल राज्य में जनवरी 2020 में अन्तिम सप्ताह में कोरोना वायरस का पहला केश केरल में प्रकाश में आया इसके बाद विभिन्न राज्यों में कोरोना के केशों में लगातार वृद्धि हुई जब स्थिति भयावह होने लगी तो 24 मार्च 2020 को भारतीय प्रधानमंत्री ने कोरोना वायरस की गम्भीरता को देखते हुए। देशभर में लॉकडाउन का फैसला किया तब से लेकर अब तक लॉकडाउन 4 बार बढाने के साथ ही इसमें ढील देते हुए अनलॉक (Unlock-1) लागू किया गया उसके बाद अनलॉक–2 की प्रक्रिया हुई जिससे लोगों को कुछ राहत दी गई जिससे वे अपनी आवश्यकताओं की जरूरी समान तथा बाहर जाकर कुछ कार्य कर सके।

पूरी दुनिया के हिला देने वाली कोविड–19 महामारी का विश्वव्यापी प्रकोप अब भी बना हुआ है। मूलतः जीव विज्ञान के क्षेत्र की इस परिघटना ने वैश्विक स्वास्थ्य आपदा बन गई महामारी का रूप ले लिया। इस महामारी का असर मानव जीवन के अनेक अन्य क्षेत्रों–सामाजिक–सांस्कृतिक आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में साफ नजर आया विभिन्न देशों के लोगों ओर स्थानों के परस्पर

सम्पर्क का इस बीमारी के फैलने में योगदान रहा। इस अन्तर्सम्बन्ध को समझना विश्वग्राम की बलवती धारणा के औचित्य के आवश्यक है।

भारत में कोरोना वैक्सीन के उपयोग में सहयोग की दृष्टि भारत की पहली वैक्सीन मैत्री इस महामारी का फैलाव रोकने और अर्थव्यवस्था को फिर से पटरी पर लाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास है। यह मानवीय प्रयास भारत की बहुजन सुखाय बहुजन हिताय की विवेकपूर्ण और सुनिश्चित नीति के अनुरूप है। भारतीय टीकों के पीछे देश के वैज्ञानिको का कौशल और पेशेवर दृष्टिकोण था जिसे सराहना मिली भारत की सुपरिचित क्षमताओं और विश्व में टीको का सबसे बड़ा निर्माता होने की वजह से उसकी वैश्विक आपूर्ति श्रंखला में महत्वपूर्ण भूमिका है।

भारत की वैक्सीन नीति को ठीक से समझने के लिए हमें विकसित देशो की अपनी जनसंख्या से कही ज्यादा वैक्सीन जमा कर लेने की प्रवृत्ति को देखना होगा। दूसरी ओर विकासशील और गरीब देशों के लोग वैक्सीन नही खरीद पाने की वजह से असुरक्षित ही रह जाएगे इस परिप्रेक्ष्य में वैक्सीन संजीवनी बनाने में अपने कौशल को साथी देशों के साथ बाटने की भारत की उदारता को समझा जा सकता है।

भारत की वैक्सीन मैत्री से लोकतान्त्रिक आदर्शो सहयोग मानवीय विकास और करूणा से भरे सांस्कृतिक मूल्यों वालें भारत के दृष्टिकोण को पुनःरेखांकित करने का अवसर मिला है साथ ही स्वयं को विश्व के एक जिम्मेदार देश के रूप में प्रस्तुत करने का अवसर मिला है। जो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्य का हकदार है करूणा और उदारता भारतीय मेघा की विशिष्ट पहचान है जो हमारे लोकतन्त्र और हमारी संस्थाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

भारत की दोनों अग्रणी कोविड–19 वैक्सीन दुनिया की सबसे सस्ती है। कोविड शील्ड को सीरभ इंस्टटीयूट ऑफ इंडिया ने विकसित किया है और कोवैक्सीन भारत बायोटेक द्वारा ICMR और राष्ट्रीय वायरोलोजी संस्थान के सहयोग से तैयार किया गया है। वैज्ञानिकों प्रयोगों का सिलसिला जारी है लेकिन भारत की कई मायनों में बेजोड़ उत्पादन क्षमता को देखते हुए वैश्विक वैक्सीन नीति का रूझान भारत के पक्ष में है। मनोवैज्ञानिकों ने कोरोना महामारी को तनाव का मुख्य कारण बताया है क्योंकि यह संक्रमित बीमारी है इसलिए कोई व्यक्ति इसके बारे में सुनकर ही तनाव में आ जाता है। मलिन बस्तियों में जनघनत्व अधिक होने के कारण कोरोना महामारी का प्रभाव अधिक पड़ा है।

मलिन बस्तियों में लोगों के पास रोजगार के साधन कम होने के कारण उनको अपनी जीविका उपार्जन करना कठिन हो गया क्योंकि उनको सामान्य स्थिति में जीवन यापन करना कठिन होता है। क्योंकि ये लोग रोज कमा कर खाने वाले की संख्या अधिक होती है तथा साथ ही उनमें आय व्यय प्रबन्धन भी उचित नही होता है और रोजगार के सीमित साधनों के कारण कभी–कभी मजदूरी अच्छी मिलती है और कभी–कभी मजदूरी मिलती नही है। कोरोना महामारी के चलते इन लोगों की रोजगार के साधन समाप्त हो गये क्योंकि कोरोना महामारी के बढते केशो को देखते हुए लाकडाउन लगाया गया जिसके कारण मजदूरी से सम्बन्धित सभी रोजगार के साधन समाप्त हो गये और सब्जी और फल विक्रेता के साधन वाले रोजगार ही शेष रह गये।

मलिन बस्तियों में रहने वाले अनेक लोगों को रोजगार के साधन न होने के कारण अपना आवास छोड़कर अपने मूल गाँवों की ओर पलायन करना पड़ा क्योंकि रोजगार के अभाव में उनके परिवार के सामने भूखे मरने की स्थिति थी मेरठ शहर की मलिन बस्तियों के लोग जो लोग दिल्ली

तथा अन्य बडे शहरों में रह रहे थे उन लोगों के यहां आ जाने से वहां पर कोरोना के संक्रमण की दर भी उच्च हो गयी जिसका एक कारण यह भी है यह कि जनसंख्या घनत्व के अनुपात को देखते स्वास्थ्य सेवाएं बहुत कम मात्रा में पायी जाती है और कोरोना महामारी से स्वास्थ्य सेवाएं चरमरा गई।

शिक्षा पर प्रभाव

मेरठ शहर की मलिन बस्तियों में शिक्षा का स्तर निम्न स्तर का पाया जाता है मेरठ शहर की 108 मलिन बस्तियों में शहर की आधी से अधिक 55% जनसंख्या निवास करती है और इनमें शिक्षा के अनुपात का स्तर लगभग 15 से 20% शिक्षा की सेवाएं उपलब्ध रहती है जिसके कारण शिक्षा के स्तर के लिए आस–पास उच्च रिहायशी शहरी बस्तियों पर निर्भर रहती है।

कोरोना महामारी के चलते सभी शिक्षण संस्थाएं अचानक बन्द कर दी गई थी ताकि कोरोना संक्रमण से बचाव हो सके। इसके बाद तमाम संस्थाओं ने अध्यापन के लिए इंटरनेट की सहायता से गूगल मीट, जूम आदि का उपयोग करते हुए छात्रों को उनके घर पर अध्यापन कार्य को चलाने का सराहनीय प्रयास किया। तमाम कठिनाइयों के बावजूद लोग इस माध्यम से कार्य कर पा रहे है। अकादमिक अन्तः क्रिया के लिए इस डिजिटल माध्यम का उपयोग अनंत सम्भावनाएं लिए हुए है। जब इंटरनेट से अध्यापन होता है। तो अध्यापक को भी संचार माध्यम के तैयार होना पडता है। उसके कार्य का लेखा जोखा बनाया जाता है। उसकी कक्षा का वीडियों बन सकता है और उसकी पाठ्य सामग्री बाद में भी प्रयुक्त हो सकती है उसका सुधार और विस्तार भी सम्भव है। जहाँ एक तरफ ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम दूर दराज के क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार हुआ है वही दूसरी ओर मलिन बस्तियों में लोगों की आर्थिक स्थिति सही न होने के कारण उनको ऑनलाइन शिक्षा का कोई लाभ नहीं मिल पाता है। क्योंकि उनके बारे में सोचना भी कल्पना से परे है क्योंकि मलिन बस्तियों के गरीब लोगों को पास स्मार्टफोन, तथा कम्प्यूटर की सुविधा बहुत कम उपलब्ध होती है तथा उनके खास पर्याप्त साधन नहीं होते है तथा साधनों के अभाव में उनके सरकारी विद्यालय तथा प्राइवेट विद्यालय भी ये सुविधा पर्याप्त रूप से सह नहीं पाई जाती है जिसके कारण उनका शिक्षा स्तर गिरता जा रहा है और ये अपने बच्चों की शिक्षा पर कोई विशेष ध्यान नहीं दे पाते हैं। जिसके कारण कोरोना काल में स्कूल बंद हो जाने से बहुत से बच्चों का स्कूल ही छूट गया देश के सभी बच्चों के लिए ऑनलाइन सम्भव नही है। नैशनल सैपल सर्वे के आंकडों के मुताबिक केवल 23 फीसदी भारतीय घरों में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है इसमें मलिन बस्तियों तथा ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति खराब है। केवल 8 फीसदी घर ऐसे है जहां कम्प्यूटर और इंटरनेट दोनों की सुविधा उपलब्ध है। देश में मोबाइल की उपलब्धता 78 फीसदी आंकी हो गयी है। एक घर में अधिकांशतः एक ही मोबाइल उपलब्ध है जबकि स्कूल में पढने वाले की संख्या अधिकांश दो या उससे अधिक है।

इस प्रकार इन सभी कारणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आनलाइन शिक्षा का लाभ समिति छात्रों को ही उपलब्ध हो सका है मलिन बस्तियों में यह स्तर बहुत ही निम्न स्तर का रहा है।

रोजगार पर प्रभाव

कोरोना महामारी से हर वर्ग के साथ माध्यम वर्ग के लोग तथा निम्न वर्ग के लोगों पर इस महामारी से बुरी तरह प्रभावित हुए क्योंकि इन लोगों के पास न तो काफी दिनों का खाने के राशन है और न ही धनराशि क्योंकि निम्न तथा मध्यम वर्ग के लोगों के जीविका के साधन

उनकी रोजगार के ऊपर निर्भर होते है। क्योंकि ये लोग अधिकांशतः रोजाना कमाने वाले लोगों का वर्ग होता है जिससे उनका दैनिक तथा मासिक उपभोग का वर्ग होता है। कोरोना महामारी में सरकार तथा प्रशासनों द्वारा निम्न तथा मध्यम वर्ग के लिए उचित मदद प्रदान की जिससे उनकी भोजन सम्बन्धी का तो निदान हो तथा पर उनके रोजगार की ओर अधिक ध्यान नही दिया जा सका क्योंकि इसका सबसे प्रमुख कारण बहुत बडे स्तर पर लोगों का रोजगार समाप्त होना था क्योंकि प्राइवेट सेक्टर में 40 प्रतिशत कर्मचारी ही तकनीकी स्तर के माध्यम से अपना रोजगार कर पा रहे थे।

कोरोना महामारी का वैश्विक प्रभाव होने के कारण भारत से बाहर रोजगार कर रहे कर्मचारियों का रोजगार समाप्त होने के कारण वे सभी लोगों भारत में आ गये जिससे बेरोजगारी का स्तर अब तक चरम स्थिति में पहुंच गया इन सभी कारणों से मलिन बस्तियों प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सीधा प्रभाव पडा क्योंकि ये मलिन बस्तियों के निवासी रोजगार के लिए शहरों की ओर आकर्शित होते है और शहरों के रोजगार के समाप्त प्राय हो गये जिससे इन निवासियों को रोजगार की गम्भीर समस्या का सामना करना पडा। प्रधानमंत्री ने जुलाई में एक जाब पार्टल की शुरूआत की इस पर 40 दिन में 69 लाख लोग ने पंजीकरण करवाया पर जाब पाने वाले संख्या काफी कम है।

स्वास्थ्य पर प्रभाव

कोरोना महामारी का कहर भारत समेत समस्त विश्व को अपने दुश्प्रभाव के परिणाम सभी को भुगतने पडे। विश्व में कोरोना वायरस से प्रभावित लोगों की संख्या लगभग 25 करोड तथा विश्व में कोरोना वायरस से लगभग 50.4 लाख लोगों की मृत्यु हो गयी जबकि भारत में कोरोना वायरस से 34.4 करोड लोग इस संक्रमण से प्रभावित हुए और इस संक्रमण से भारत में 4.61 लाख लोगों की मृत्यु हो गयी इस वायरस से संक्रमित लोगों की इम्यूनिटी की क्षमता काफी कम हो गयी जिसके चलते उनके अनेक प्रकार की बीमारियों से ग्रसित हो गये।

निष्कर्ष

कोरोना महामारी काल में लोगों की जीवन शैली पर कई तरह के बदलाव देखने को मिले। सभी लोग अपने परिवार को सुरक्षित रखना चाहते थे। लोगों ने सभी प्रकार के सामाजिक सम्बन्धों से दूरी बना ली। शिक्षा का स्तर तो काफी नीचे गिर गया क्योंकि सभी लोग सबसे पहले अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक थे लोगों का मानना था कि अगर जिन्दगी रही तो शिक्षा वाद में भी ग्रहण की जा सकती है। लोगों के रोजगार चले जाने पर सभी लोगों अपने मूल गांवों की ओर पलायन करने लगे। जिससे उनकी शिक्षा का आनलाइन हो जाने पर भी गांवों में इंटरनेट की पर्याप्त सुविधा न होने के कारण शिक्षा का स्तर का बीच गिरा। निम्न तथा मध्यम वर्ग के लोगों का रोजगार समाप्त हो गये जिससे उनका जीवन स्तर निम्नतर श्रेणी का गया। इस प्रकार कोरोना वायरस महामारी ने मानव जगत का विकास को अवरूद्ध कर दिया।

सन्दर्भ सूची

1. Kumar (2021) retrieved from https:www.jagram.com/news/national
2. Jagram (2020), retrieved from https:/www.jagram.com/Jharkhand/, as on 4th may 2020.

3. मण्डल डी (9 जनवरी, 2021) https://www.sunday guardionlive.com/retrieved from https://www.sunday guardion.live.com/news:https://www.sunday guardion live.com/news/Indian.vaccines-covid-19 cheapest world
4. मोर्दानी, एस० (21फरवरी 2021) https://www.indiatoday.in/ coronavirus. outbreak/ story:https//www.Indiatoday.in/caronavirus outbreak/story/serun.institutewho emergency use listing-oxford-covidvaccine.
5. रेन्स एमिली, अनिरूद्ध कृष्णा और एरिक विबेल्स (2019) काम्बाइनिंग सैटेलाइट एण्ड सर्वे डेटा टू स्टडी इंडियन स्लम्सः एविडेस आन द रैंज ऑफ कंडीशन एण्ड इम्प्लिकेशस फार अर्बन पालिसी, एनवायर्नमेट एण्ड अर्बनाइजेशन
6. कृष्णा, अनिरूद्ध (2013) ''स्टाक इन प्लेस इन्वेस्टिगेटिंग सोशल मोबिलिटी इन 14 बेगलुरू स्लम्स'' जर्नल ऑफ डिवेलपमेंटल स्टडीज 49(7) 1010–28
7. चौधरी के०सी० (2020) ''कोरोनाकाल में तनाव प्रबन्धन'' हाशिये की आवाज, नई दिल्दी अंक 7 जुलाई 2020
8. मिश्र उमाशंकर ''दुनिया में बढती जन्तु जनित रोगो की दहशत विज्ञान प्रगति अप्रैल 2020, नई दिल्ली।